

LIVE THE MESSAGE

FREE DIGITAL EDITION

Digital distribution credit

Lead Author: Dr H

TEAM ACCD

livethemessage.life

This digital edition is provided free of charge. You may read, download, copy, print, and share the complete, unmodified file. Quotation is welcome with clear attribution to Lead Author Dr H and TEAM ACCD. Do not alter the text, remove credit, create a modified edition, or reproduce it commercially without written permission. The original book interior that follows is preserved as supplied.

Live the message. Words are easy.

READY FOR LIFE

**A GOOD INSTITUTION IS A TOOL,
NOT THE GOAL**

HINDI EDITION

TEJAS GILBERT

विषय-सूची

आरंभ: वास्तव में क्या मायने रखता है	4
शुरू करने से पहले: हमारी ज़िम्मेदारी	4
अध्याय एक: अच्छी यूनिवर्सिटी में प्रवेश कैसे पाएँ	18
अच्छी यूनिवर्सिटी क्यों?	18
कोई जादुई फॉर्मूला नहीं है	20
स्कूल से भी अधिक महत्वपूर्ण है मार्गदर्शन	24
अध्याय दो: अच्छी शिक्षा और अच्छे स्कूल तक पहुँचने की राह	28
स्कूल केवल समीकरण का एक हिस्सा है	29
शिक्षा आखिर है किसलिए?	31
जिस व्यवस्था में हैं, उसे समझिए	34
बच्चे को बहुत जल्दी परिभाषित मत कीजिए	38
संकीर्णता से पहले विस्तार दीजिए	40
स्वयं बने रहिए	42
माता-पिता वातावरण बनाते हैं	46
बच्चे के पास लौटने के लिए सुरक्षित जगह	47

विषय-सूची

अध्याय तीन: वे चार वर्ष जो बहुत मायने रखते हैं	50
बिना थकाए मार्गदर्शन करना	62
सम्पूर्ण व्यक्तित्व	66
वातावरण	106
इसे जीओ: उदाहरण से पालन-पोषण	128
“मैं नहीं कर सकता” कहने से पहले कोशिश करो	129
पैसे के पीछे मत भागो	131
मानकों को लागू करना ज़रूरी है	133
पालन-पोषण का अर्थ “टाइगर पेरेंटिंग” नहीं है	135
अठारह वर्ष तक तुम मेरी ज़िम्मेदारी हो	137
उन्हें अपने साथ लेकर चलो	139
नाव और पानी	140
तरीका ही संदेश है	141

शुरू करने से पहले: वह ज़िम्मेदारी जिसे हम स्वीकार करते हैं

बच्चे का पालन-पोषण करना शायद उन सबसे बड़ी ज़िम्मेदारियों में से एक है जिन्हें कोई व्यक्ति अपने जीवन में स्वीकार करता है।

कार चलाने की अनुमति मिलने से पहले हमसे नियम सीखने की अपेक्षा की जाती है। हम सिद्धांत पढ़ते हैं, व्यावहारिक क्षमता दिखाते हैं और परीक्षा पास करते हैं। कारण सीधा है: हमारे निर्णय केवल हमें ही नहीं, हमारे आसपास के लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

लेकिन माता-पिता बनने की ज़िम्मेदारी इससे कहीं अधिक गहरी और लंबे समय तक चलने वाली होती है, फिर भी इसके लिए कोई सार्वभौमिक परीक्षा नहीं है। कोई लाइसेंस नहीं, कोई अनिवार्य प्रशिक्षण नहीं, कोई एक निर्देश-पुस्तिका नहीं और निश्चित रूप से कोई ऐसा स्वर्ण-मानक नहीं जिसे हर परिवार पर लागू किया जा सके।

हममें से अधिकांश लोग रास्ते में ही सीखते हैं।

हम अपने माता-पिता से सीखते हैं, अपनी संस्कृति से सीखते हैं, अपने समाज से, अनुभवों से, सफलताओं से और अपनी गलतियों से सीखते हैं। कभी शिक्षक सलाह देते हैं, कभी रिश्तेदार, डॉक्टर, मित्र और कभी ऐसे लोग भी

जिनसे हमारा कोई विशेष परिचय नहीं होता।
हम इन सब बातों को जोड़ते हैं और फिर यह
समझने की कोशिश करते हैं कि हमारे सामने
खड़े बच्चे के लिए इनमें से क्या सही है।

इससे पालन-पोषण आसान नहीं हो जाता।

बल्कि ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है।

जहाँ भी एक से अधिक लोगों को साथ रहना या
काम करना होता है, वहाँ किसी न किसी प्रकार
की संरचना विकसित होती है। समाज अपने
नियम और कानून बनाता है। संस्थाएँ भूमिकाएँ
और ज़िम्मेदारियाँ तय करती हैं। परिवारों में भी
अपेक्षाएँ, सीमाएँ, भूमिकाएँ और ज़िम्मेदारियाँ
होती हैं।

समय के साथ परिवारों के रूप बदले हैं और आगे भी बदलते रहेंगे। कोई बच्चा अपने जैविक माता-पिता के साथ बड़ा हो सकता है, कोई अकेले माता या पिता के साथ, कोई दत्तक माता-पिता, सौतेले माता-पिता, समान-लिंग वाले माता-पिता, विस्तृत परिवार, अभिभावक या किसी अन्य पारिवारिक व्यवस्था में।

इस चर्चा में नाम या संरचना सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है।

महत्वपूर्ण है ज़िम्मेदारी।

किसी न किसी व्यक्ति को बच्चे की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेनी होती है, सीमाएँ तय करनी होती हैं, अवसर देने होते हैं, मूल्य सिखाने होते हैं, स्वतंत्रता विकसित करनी होती है और तब तक

अनगिनत निर्णय लेने होते हैं जब तक बच्चा धीरे-धीरे अपने निर्णय स्वयं लेने योग्य न हो जाए।

ये निर्णय इसलिए मायने रखते हैं क्योंकि बच्चा उन परिस्थितियों का चुनाव नहीं करता जिनमें वह जन्म लेता है।

वह अपने जीन नहीं चुनता।

वह अपने जन्म का देश नहीं चुनता।

वह परिवार की आर्थिक स्थिति, भाषा, संस्कृति या सामाजिक वातावरण नहीं चुनता।

वह अपने माता-पिता, अपना पड़ोस या शुरुआती जीवन में मिलने वाले अनेक अवसर नहीं चुनता।

इसलिए हर जीवन का एक बड़ा हिस्सा ऐसी परिस्थितियों से प्रभावित होता है जो माता-पिता और बच्चे—दोनों के नियंत्रण के बाहर होती हैं।

हमें इसका कोई प्रतिशत तय करने की आवश्यकता नहीं है।

और ईमानदारी से कहें तो हम कर भी नहीं सकते।

महत्वपूर्ण प्रश्न कुछ और हैं:

हमारे प्रभाव में क्या है?

यह हिस्सा शायद उन चीज़ों से छोटा हो जिन्हें हम नियंत्रित नहीं कर सकते।

लेकिन छोटा होने का अर्थ महत्वहीन होना नहीं है।

कभी-कभी सही जगह किया गया छोटा-सा परिवर्तन पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है।

माता-पिता यह प्रभावित कर सकते हैं कि घर में पढ़ना एक सामान्य आदत बने या नहीं।

वे शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण प्रभावित कर सकते हैं।

वे संगठन, समय की पाबंदी और ज़िम्मेदारी सिखा सकते हैं।

वे सीमाएँ तय कर सकते हैं।

वे जिज्ञासा को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

वे बच्चे को खेल, संगीत, विज्ञान, कला, वाद-
विवाद, तकनीक या सामाजिक सेवा से परिचित
करा सकते हैं।

वे बच्चे की ताकत पहचान सकते हैं।

वे उसकी कमज़ोरियाँ देख सकते हैं।

जहाँ मदद की आवश्यकता हो वहाँ सहायता
उपलब्ध करा सकते हैं।

वे सिखा सकते हैं कि असफलता प्रयास का अंत
नहीं होती।

वे ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं।

वे बच्चे को विशेषाधिकार और अधिकार समझने में अंतर सिखा सकते हैं।

वे अवसर पैदा कर सकते हैं।

और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे बच्चे को इतना समय और ध्यान दे सकते हैं कि वह यह समझ सके कि वह वास्तव में कौन है।

इनमें से कोई भी चीज़ किसी निश्चित परिणाम की गारंटी नहीं देती।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण है।

एक ही घर में पले दो बच्चे आगे चलकर बिल्कुल अलग वयस्क बन सकते हैं। मनुष्य

मशीन नहीं हैं कि हम समान निर्देश डालें और हर बार समान परिणाम प्राप्त करें।

चर बहुत अधिक हैं।

स्वभाव, क्षमता, स्वास्थ्य, मित्र, शिक्षक, समय, संयोग और अनगिनत दूसरे प्रभाव लगातार जीवन में प्रवेश करते रहते हैं।

इसीलिए पालन-पोषण को किसी एक सूत्र में नहीं बदला जा सकता।

हम जो कर सकते हैं वह है—परिस्थितियों को बेहतर बनाना।

हम उन तत्वों को पहचान सकते हैं जिन पर हमारा प्रभाव है और फिर उन्हें समझदारी से उपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं।

यही सिद्धांत एक परीक्षित जीवन के पूरे विचार में बार-बार लौटता है:

अपनी सारी ऊर्जा उन चीज़ों से लड़ने में मत लगाइए जिन्हें बदला नहीं जा सकता। ध्यान से पहचानिए कि क्या बदला जा सकता है, और फिर उस पर काम कीजिए।

शिक्षा उन्हीं क्षेत्रों में से एक है।

सिर्फ स्कूल चुनना नहीं।

सिर्फ अच्छे अंक लाना नहीं।

और निश्चित रूप से उस समय शुरुआत करना नहीं जब अचानक आवेदन-पत्र सामने आ जाए।

तैयारी धीरे-धीरे बनती है।

चरित्र धीरे-धीरे बनता है।

आदतें धीरे-धीरे बनती हैं।

आत्मविश्वास धीरे-धीरे बनता है।

समय को संभालने की क्षमता, निराशा से निपटना, बड़ों से संवाद करना, दूसरों के साथ काम करना और अपनी ज़िम्मेदारी लेना—ये सब धीरे-धीरे विकसित होते हैं।

जब तक कोई विश्वविद्यालय या चयनात्मक विद्यालय आवेदन देखता है, तब तक उस आवेदन के पीछे की कहानी का बड़ा हिस्सा पहले ही लिखा जा चुका होता है।

इसीलिए आगे की चर्चा किसी गुप्त प्रवेश-
फ़ॉर्मूले को खोजने के बारे में नहीं है।

ऐसा कोई फ़ॉर्मूला है ही नहीं।

यह समझने के बारे में है कि किन बातों को
वास्तव में प्रभावित किया जा सकता है, उन पर
कब काम शुरू करना चाहिए, और माता-पिता
तथा बच्चा किस तरह साथ काम कर सकते हैं
—बिना पूरे बचपन को केवल प्रवेश की तैयारी
में बदल दिए।

लक्ष्य केवल प्रभावशाली आवेदन तैयार करना
नहीं होना चाहिए।

लक्ष्य ऐसा युवा तैयार करना होना चाहिए जो आगे मिलने वाले अवसरों का सही उपयोग कर सके।

एक अच्छा और प्रतिष्ठित स्कूल उन अवसरों में से एक हो सकता है।

लेकिन यह पूछने से पहले कि अच्छे स्कूल में प्रवेश कैसे मिले, हमें एक और बुनियादी प्रश्न पूछना चाहिए।

CHAPTER ONE

अच्छी यूनिवर्सिटी में प्रवेश कैसे पाएँ

भाग 1 — असल में क्या मायने रखता है

1. अच्छी यूनिवर्सिटी क्यों?

लगभग हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा किसी नामी स्कूल या यूनिवर्सिटी में जाए। लेकिन “वहाँ कैसे पहुँचना है?” पूछने से पहले एक प्रश्न पूछना चाहिए:

वहाँ जाना क्यों है?

सिर्फ पढ़ाई ही इसका उत्तर नहीं है। अच्छी शिक्षा बहुत-सी जगहों पर मिल सकती है।

बड़ी संस्थाओं की एक असली ताकत है
उनका **समुदाय और पूर्व छात्रों का नेटवर्क**।

भारत में IIT और AIIMS के नाम अपने आप
बहुत कुछ कहते हैं। थाईलैंड में
Chulalongkorn, Mahidol और
Thammasat की अपनी प्रतिष्ठा और नेटवर्क
हैं। अमेरिका में Harvard, Princeton,
Stanford और MIT जैसे विश्वविद्यालयों के
पूर्व छात्र पीढ़ियों से अपने संस्थान से जुड़े
रहते हैं।

यही **alumni network** की शक्ति है।

लोग अक्सर उस संस्था को नहीं भूलते जिसने
उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया। आगे
चलकर वही छात्र मार्गदर्शक, नियोक्ता,
दानदाता और समर्थक बनते हैं।

यही कारण है कि कुछ अमेरिकी विश्वविद्यालयों के पास बहुत बड़े endowment funds हैं। इन्हीं संसाधनों से शोध, अध्यापन, छात्रवृत्ति और financial aid को सहायता मिलती है।

इसलिए किसी बड़ी यूनिवर्सिटी में प्रवेश का अर्थ केवल एक प्रसिद्ध नाम वाली डिग्री पाना नहीं है।

आप एक पूरे तंत्र और समुदाय में प्रवेश कर रहे होते हैं।

2. कोई जादुई फॉर्मूला नहीं है

दूसरी बात बहुत साफ समझनी होगी:

किसी elite university में प्रवेश का कोई निश्चित फॉर्मूला नहीं है।

ऐसी कोई सूची नहीं है जिसमें लिखा हो:

इतने नंबर लाओ।

इतनी activities करो।

इतने कठिन subjects लो।

ये पाँच boxes tick करो।

और admission पक्का।

ऐसा नहीं होता।

विशेषकर अमेरिका की अत्यधिक चयनात्मक universities में बहुत बड़ी संख्या में योग्य छात्र आवेदन करते हैं। उनमें से बहुतों के grades पहले से शानदार होते हैं।

इसलिए admission केवल numbers का खेल नहीं रह जाता। वहाँ मानवीय निर्णय भी आता है।

यही कारण है कि तैयारी अंतिम वर्ष में शुरू नहीं हो सकती।

सत्रह वर्ष की उम्र में अचानक उठकर यह कहना कि “अब मैं Harvard जाना चाहता हूँ” बहुत देर हो सकती है।

मेरी दृष्टि में लगभग **तेरह से सत्रह वर्ष** दिशा तय करने वाले अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष हैं।

इन्हीं वर्षों में आदतें दिखाई देती हैं:

अनुशासन।

लगातार मेहनत।

जिज्ञासा।

जिम्मेदारी।

और बिना किसी की तालियों के काम करते रहने की क्षमता।

लेकिन माता-पिता की भूमिका केवल दिनभर “पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो” कहना नहीं है।

एक ही बात बार-बार कहने पर बच्चा सुनना बंद कर देता है।

ज़रूरत है **सोची-समझी भागीदारी** की।

जैसे-जैसे महत्वपूर्ण शैक्षणिक वर्ष आते हैं, अपेक्षाएँ स्पष्ट होनी चाहिए और मानक मजबूत होने चाहिए।

हर उम्र खेलने की नहीं होती।

हर उम्र केवल पढ़ने की भी नहीं होती।

समझदारी यह जानने में है कि किस समय किस चीज़ की प्राथमिकता है।

3. स्कूल से भी अधिक महत्वपूर्ण है मार्गदर्शन

कई माता-पिता बहुत छोटे बच्चे को किसी प्रसिद्ध nursery या kindergarten में डालने के लिए अत्यधिक पैसा और ऊर्जा खर्च कर देते हैं।

मानो उसी निर्णय से पूरा भविष्य तय हो जाएगा।

मैं ऐसा नहीं मानता।

विश्वविद्यालय में प्रवेश के समय बच्चे के शुरुआती nursery years से कहीं अधिक

महत्वपूर्ण वे वर्ष होते हैं जब उसका व्यक्तित्व,
पढ़ाई और कार्यशैली बन रही होती है।

यहाँ तक कि हाई स्कूल का नाम भी सब कुछ
नहीं है।

बहुत अच्छे स्कूल का छात्र अवसर बर्बाद कर
सकता है।

साधारण स्कूल का छात्र असाधारण सफलता
प्राप्त कर सकता है।

अक्सर अंतर पैदा करता है एक व्यक्ति जो
उस बच्चे के जीवन में **सचमुच शामिल है।**

वह माँ या पिता हो सकता है।

लेकिन आवश्यक नहीं।

वह बड़ा भाई हो सकता है।

बहन हो सकती है।

शिक्षक हो सकता है।

कोच या mentor हो सकता है।

महत्वपूर्ण यह है कि कोई हो जो देख रहा है।

जो सही प्रश्न पूछता है।

जो गिरते हुए स्तर को जल्दी पहचानता है।

जो कठिन समय में प्रोत्साहित करता है।

और जो आवश्यकता पड़ने पर साफ कह
सके:

“नहीं। यह महत्वपूर्ण है।”

अंत में हम अगली वास्तविकता तक पहुँचते
हैं।

यदि आप अत्यंत चयनात्मक विश्वविद्यालयों की बात कर रहे हैं, तो अच्छे grades आपको अलग नहीं बनाते।

अच्छे grades अपेक्षित हैं। कठिन courses भी अपेक्षित हैं।

यह प्रवेश की मंज़िल नहीं।

यह केवल शुरुआत है।

अगला प्रश्न है:

जब हजारों बच्चों के नंबर अच्छे हों, तो admissions committee आपको क्यों याद रखे?

यहीं से अगला अध्याय शुरू होता है।

CHAPTER TWO

अच्छी शिक्षा और अच्छे स्कूल तक पहुँचने की राह

मैं अमेरिकी स्कूल प्रणाली पर सबसे सहजता और आत्मविश्वास से टिप्पणी कर सकता हूँ, और कुछ हद तक O-Level तथा A-Level प्रणाली पर भी। थाई, भारतीय या चीनी स्कूल प्रणालियों पर मैं उतनी स्वतंत्रता से टिप्पणी नहीं करूँगा, क्योंकि मैं उन्हें उसी गहराई से नहीं जानता।

लेकिन एक बात मैं मानता हूँ कि मूल सूत्र
लगभग हर जगह समान रहता है।

हर प्रणाली की अपनी परिस्थितियाँ और
अपवाद होंगे। जो बात अमेरिकी व्यवस्था में पूरी
तरह लागू होती है, वह किसी दूसरे देश में थोड़ी
अलग तरह से लागू हो सकती है। इसलिए मेरा
उद्देश्य एक सामान्य ढाँचा देना है—यह समझने
का तरीका कि हमें बच्चे को अच्छे स्कूल में
पहुँचाने की पूरी कोशिश क्यों करनी चाहिए,
और उससे भी महत्वपूर्ण, अच्छी शिक्षा का
वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए।

स्कूल केवल समीकरण का एक हिस्सा है

मैंने ऐसे माता-पिता देखे हैं जो बच्चे के जन्म के
लगभग उसी दिन से स्कूल को लेकर चिंतित हो
जाते हैं।

कौन-सा किंडरगार्टन?

कौन-सा प्राथमिक स्कूल?

कौन-सा माध्यमिक स्कूल?

इस चिंता का कुछ हिस्सा उचित हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि बहुत-सी ऊर्जा अनावश्यक रूप से खर्च होती है।

मेरे विचार में बाद के स्कूल वर्ष—विशेषकर हाई स्कूल—कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। लेकिन तब भी मैं हमेशा कहता हूँ कि परिणाम केवल स्कूल तय नहीं करता।

असल बात है **बच्चे के चारों ओर मौजूद टीम।**

और उस टीम की शुरुआत माता-पिता से होती है।

सिर्फ स्कूल की फीस भर देना समाधान नहीं है।
मैंने ऐसे माता-पिता को कहते सुना है, “मैं
अतिरिक्त घंटे काम कर रहा हूँ। मैं डबल शिफ्ट
कर रहा हूँ ताकि यह स्कूल फीस भर सकूँ।”

यह त्याग सम्मान के योग्य है, लेकिन कभी-कभी
हम बड़ी बात भूल जाते हैं।

**माता-पिता का काम स्कूल के गेट पर समाप्त
नहीं होता।**

वह घर पर जारी रहता है।

घर का वातावरण, अपेक्षाएँ, सीमाएँ, प्रोत्साहन
और माता-पिता द्वारा दिया गया उदाहरण—ये
सभी बच्चे की शिक्षा का हिस्सा हैं।

शिक्षा आखिर है किसलिए?

स्कूल प्रणालियों पर चर्चा करने से पहले हमें यह याद रखना चाहिए कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है।

शिक्षा को बच्चे की उम्र के अनुरूप अनुभव और गतिविधियाँ देनी चाहिए जो उसे आगे चलकर एक **संपूर्ण और संतुलित वयस्क** बनने में सहायता करें।

शैक्षणिक उपलब्धि केवल एक हिस्सा है।

चरित्र महत्वपूर्ण है।

परिवार के प्रति दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।

सम्मान महत्वपूर्ण है।

रचनात्मकता महत्वपूर्ण है।

अपनी बात स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना
महत्वपूर्ण है।

किसी विषय के अलग-अलग हिस्सों के साथ
उसकी पूरी तस्वीर देख पाने की क्षमता भी
महत्वपूर्ण है।

यही चीज़ें अंततः एक पूर्ण इंसान बनाने में मदद
करती हैं।

कभी-कभी तथाकथित एशियाई “टाइगर
पेरेंटिंग” अंक और शैक्षणिक सफलता पर इतनी
केंद्रित हो जाती है कि शिक्षा का यह बड़ा उद्देश्य
पीछे छूट जाता है।

विभिन्न देशों और शिक्षा प्रणालियों के अपने
अनुभव से, अमेरिकी व्यवस्था की जिन बातों की
में प्रशंसा करता हूँ उनमें से एक यह है कि वह

केवल किताबों तक सीमित रहने के बजाय बच्चे के संपूर्ण विकास का प्रयास करती है।

इसका अर्थ यह नहीं कि अमेरिकी व्यवस्था पूर्ण है। बिल्कुल नहीं।

लेकिन संपूर्ण व्यक्ति को विकसित करने का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जिस व्यवस्था में हैं, उसे समझिए

किसी भी माता-पिता के लिए पहला व्यावहारिक पाठ बहुत सरल है:

समझिए कि आपका बच्चा जिस शिक्षा प्रणाली में पढ़ रहा है, वह कैसे काम करती है।

विभिन्न प्रणालियाँ प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने के अलग-अलग तरीके अपनाती हैं।

अमेरिका में मैंने देखा है कि बच्चों को अपेक्षाकृत कम उम्र से ही कई क्षेत्रों से परिचित कराया जाता है।

किसी में खेल की प्रतिभा दिखाई दे सकती है।

किसी में फुटबॉल की।

किसी में कला की।

किसी में संगीत की।

किसी बच्चे की विज्ञान में जल्दी रुचि दिखाई दे सकती है।

कभी-कभी ये शुरुआती निर्णय समय से पहले भी हो सकते हैं, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को यह जानने के अवसर मिलते हैं कि उनकी क्षमता किस दिशा में है।

प्राथमिक विद्यालय से मध्य विद्यालय और फिर हाई स्कूल तक पहुँचते-पहुँचते उनकी रुचियों को धीरे-धीरे अधिक केंद्रित किया जा सकता है।

मैंने इथियोपिया में पढ़ाई की। मैंने नाइजीरिया में पढ़ाई की। मैंने केंब्रिज प्रणाली के अंतर्गत भी पढ़ाई की। इसलिए मैंने शिक्षा के बहुत अलग-अलग तरीकों को स्वयं अनुभव किया है।

अंतर बहुत बड़ा हो सकता है।

कई अमेरिकी स्कूलों में विद्यार्थियों को खेल मैदान, रनिंग ट्रैक, जिम, तैराकी, संगीत, थिएटर, कला और अनेक अन्य गतिविधियों की सुविधा मिलती है।

बच्चे को केवल यह संदेश नहीं दिया जाता:

“तुम्हें डॉक्टर या इंजीनियर बनना है।”

संदेश कुछ अधिक ऐसा होता है:

“यह खोजो कि तुम क्या बन सकते हो।”

अन्य देश भी यह काम बहुत अच्छी तरह करते हैं —जर्मनी, जापान, चीन, सिंगापुर, भारत और अनेक अन्य देश असाधारण प्रतिभा पैदा करते हैं।

लेकिन व्यापक राष्ट्रीय उपलब्धि को समझने का एक तरीका यह है कि हम पूरी तरह अलग-अलग क्षेत्रों को देखें: ओलंपिक, शैक्षणिक ओलंपियाड, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, शोध, कला और उत्कृष्टता के अन्य रूप।

एक स्वस्थ शिक्षा प्रणाली को कई दिशाओं में उत्कृष्टता विकसित होने की अनुमति देनी चाहिए।

बच्चे को बहुत जल्दी परिभाषित मत कीजिए

यहीं पर माता-पिता और शिक्षकों को सावधान रहना चाहिए।

यदि किसी बच्चे को C या D ग्रेड मिलता है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसमें बुद्धिमत्ता की कमी है।

मैं स्वयं बहुत धीमा विद्यार्थी था।

इसका अर्थ यह नहीं था कि मैं मूर्ख था।

बस मेरी सीखने की गति अलग थी।

मुझे यह सौभाग्य मिला कि अंततः मैंने स्वयं को पढ़ाना सीख लिया। शिक्षक जिस तरीके से कोई बात समझाते थे, उससे मैं अक्सर जुड़ नहीं पाता था।

मेरा तरीका अलग था।

मैं पढ़ता था, मूल बात पकड़ता था, सिद्धांत समझता था और फिर उसी के आसपास अपना ज्ञान बनाता था।

मैं इसी तरह सीखता था।

दूसरे लोग अलग तरह से सीखते हैं।

कुछ बहुत अधिक दृश्यात्मक विद्यार्थी होते हैं।

कुछ सुनकर बेहतर सीखते हैं।

कुछ लोगों को किसी चीज़ को करके समझना पड़ता है।

कुछ को अधिक समय चाहिए।

एक अच्छा शिक्षक—और एक अच्छा माता-पिता—यह पहचानता है कि सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते।

सवाल हमेशा यह नहीं होना चाहिए:

“तुम बाकी सबकी तरह क्यों नहीं सीख सकते?”

कभी-कभी बेहतर सवाल यह होता है:

“तुम सबसे अच्छा कैसे सीखते हो?”

संकीर्णता से पहले विस्तार दीजिए

मिडिल स्कूल विशेष रूप से खोज का समय होना चाहिए।

बच्चों को चीज़ें आजमाने दीजिए।

फोटोग्राफी।

संगीत।

खेल।

कला।

खाना बनाना।

व्यावहारिक गतिविधियाँ।

पढ़ना।

लिखना।

अलग-अलग विषय।

अलग-अलग प्रकार से स्वयं को व्यक्त करना।

आप उनकी मदद कर रहे हैं कि वे स्वयं को पहचान सकें।

साथ ही उम्र के अनुसार जीवन कौशल भी सिखाइए। बच्चों को सिखाइए कि कहानी का सार कैसे निकालें, संवाद कैसे करें, अपनी बात कैसे रखें और जो चाहिए उसे सम्मानपूर्वक कैसे माँगें।

उन्हें सीमाएँ दीजिए, लेकिन उन सीमाओं के भीतर उचित स्वतंत्रता भी दीजिए।

बच्चे अक्सर हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक समझदार होते हैं।

उन्हें पता होना चाहिए कि सीमा कहाँ है।

लेकिन उन्हें उस सीमा के भीतर बढ़ने की जगह भी चाहिए।

स्वयं बने रहिए

एक और बात है जिसे मैं अत्यंत महत्वपूर्ण मानता हूँ।

आप जो हैं, उस पर गर्व कीजिए।

आपका रंग शर्म की बात नहीं है।

आपकी जातीय पृष्ठभूमि शर्म की बात नहीं है।

आपका धर्म या सांस्कृतिक इतिहास शर्म की बात नहीं है।

दूसरों जैसा बनने के लिए स्वयं को मिटाने का प्रयास एक युवा व्यक्ति द्वारा की जाने वाली सबसे बड़ी गलतियों में से एक है।

दुनिया में इस आत्मविश्वास के साथ जाइए कि आप जानते हैं कि आप कौन हैं।

मैंने इसे स्वयं सीखा।

एक सिख के रूप में बड़े होते हुए और अलग-अलग संस्कृतियों से गुजरते हुए, कई बार मुझे संकोच हुआ। मज़ाक और बदमाशी के क्षण आए। कभी-कभी केवल नाम भी आपको अलग महसूस करा सकता था।

लेकिन अंततः मैंने एक बहुत सरल बात समझी:
मैं यही हूँ।

और अमेरिका के प्रति मेरी कृतज्ञता का एक कारण यह है कि वहाँ मुझे ऐसा वातावरण मिला जिसमें मैं स्वयं बने रहते हुए सफल हो सका।

मैं इसलिए सफल नहीं हुआ कि अमेरिका पहुँचते ही मैं अचानक अधिक बुद्धिमान हो गया।

वातावरण मेरी क्षमताओं के अनुकूल हो गया।

उसने मुझे विकसित होने दिया।

उसने मुझे स्वयं बने रहने दिया।

दुनिया के अलग-अलग हिस्सों, जिनमें अफ्रीका भी शामिल है, में पढ़ाई करने के बाद प्रतिभा को विकसित करने और अपनापन देने की इस भावना ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला।

आप किसी नए देश का हिस्सा बन सकते हैं बिना उस संस्कृति को त्यागे जिसने आपको बनाया है।

यदि आप अमेरिकी हैं, तो अमेरिकी होने पर गर्व कीजिए।

यदि आपका परिवार भारत, थाईलैंड, चीन, अफ्रीका या कहीं और से आया है, तो उस विरासत पर भी गर्व कीजिए।

इन पहचानों को एक-दूसरे से लड़ने की
आवश्यकता नहीं है।

माता-पिता वातावरण बनाते हैं

अंततः बात फिर माता-पिता पर लौटती है।

सिर्फ फीस भर देने से कोई पिता या माँ नहीं बन
जाता।

वातावरण बनाना माता-पिता का वास्तविक काम है।

मेरी पत्नी, मेरे परिवार और मैंने अपने बच्चों के
आसपास कुछ अपेक्षाएँ बनाई हैं।

हम चाहते थे कि वे प्रयास का अर्थ समझें।

हम चाहते थे कि वे चीज़ों की कीमत समझें।

आप किसी चीज़ के लिए मेहनत करते हैं।

उसे कमाते हैं।

फिर उसकी कद्र करते हैं।

शिक्षा केवल बच्चे से यह कहना नहीं है कि
किताब पढ़ो।

शिक्षा ऐसा वातावरण बनाना है जिसमें सीखने,
प्रयास, जिम्मेदारी और उपलब्धि का अर्थ हो।

बच्चे के लिए एक दृष्टि बनाए रखिए।

यही हमेशा मेरी प्रेरणा रही है।

**बच्चे के पास लौटने के लिए सुरक्षित जगह
होनी चाहिए**

और अंत में, हर बच्चे के पास ऐसी जगह होनी
चाहिए जहाँ वह जीवन कठिन होने पर लौट
सके।

यहीं माता-पिता महत्वपूर्ण होते हैं।

यहीं परिवार महत्वपूर्ण होता है।

और बहुत-से लोगों के लिए यहीं आस्था
महत्वपूर्ण होती है।

जब कोई मुश्किल में हो, तो हम चाहते हैं कि
उसकी सहज प्रतिक्रिया परिवार, मूल्यों, समुदाय
या ईश्वर की ओर जाने की हो—न कि शराब,
नशे या अन्य प्रकार के पलायन की ओर।

मैं यहाँ धर्म को इस बहस के रूप में नहीं देख रहा
कि कौन सही है और कौन गलत।

वह मूल बात नहीं है।

आस्था केवल इतना स्वीकार करना भी हो
सकती है कि कुछ चीज़ें हमारे नियंत्रण और
हमारी समझ से परे हैं।

आप जो हैं, उस पर गर्व कीजिए।

पहचान को लेकर अपना जीवन लड़ाई में मत
बिताइए।

काम।

परिवार।

मूल्य।

और यदि वह आपके जीवन का हिस्सा है, तो
आस्था।

बच्चे को इतनी मजबूत नींव दीजिए कि जब
दुनिया कठिन हो जाए, उसके पास लौटने के
लिए कोई सुरक्षित जगह हो।

CHAPTER THREE

वे चार वर्ष जो बहुत मायने रखते हैं: तेरह से सत्रह वर्ष

जीवन में कुछ ऐसे दौर आते हैं जिनके केवल कुछ वर्ष आगे आने वाले कई दशकों को प्रभावित कर सकते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि तेरह से सत्रह वर्ष की आयु ऐसा ही एक समय है।

सिर्फ चार वर्ष।

लेकिन इन चार वर्षों में बहुत कुछ बदल जाता है।

बच्चा अब पूरी तरह बच्चा नहीं रहता, लेकिन अभी वयस्क भी नहीं हुआ होता। शरीर बदल रहा होता है। हार्मोन बदल रहे होते हैं। भावनाएँ

अधिक तीव्र हो सकती हैं और कई बार स्वयं
बच्चे को भी समझ नहीं आतीं।

उसी समय पढ़ाई कठिन होने लगती है। मित्रता
बदलती है। साथियों का दबाव बढ़ता है। और
पहली बार यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण लगने
लगता है कि दूसरे लोग मेरे बारे में क्या सोचते
हैं।

अचानक रूप-रंग महत्वपूर्ण हो जाता है।

बाल कैसे हैं।

चेहरा कैसा है।

मुहाँसे क्यों हैं।

कपड़े कैसे हैं।

मैं दूसरों जैसा दिखता हूँ या नहीं।

मैं लोकप्रिय हूँ या नहीं।

मैं आकर्षक हूँ या नहीं।

मैं सामान्य हूँ या नहीं।

कई किशोर इन प्रश्नों को खुलकर नहीं कहते।

इसका अर्थ यह नहीं कि वे इनके बारे में सोच नहीं रहे।

इसीलिए किशोरावस्था शारीरिक ही नहीं,
मानसिक रूप से भी कठिन समय हो सकती है।

युवा व्यक्ति दो संसारों के बीच खड़ा होता है।
उसे लगता है कि वह दुनिया को काफी समझता
है, लेकिन जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा अभी
उसने अनुभव ही नहीं किया होता।

इसी समय संबंधों के प्रति जागरूकता भी बढ़ती है। आकर्षण और नई भावनाएँ पैदा होती हैं। और इन भावनाओं को समझना भी सीखना पड़ता है।

यहीं एक अच्छे माता-पिता, शिक्षक, बड़े रिश्तेदार या मार्गदर्शक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

किसी को शांत स्वर में यह कहने वाला होना चाहिए:

“जो तुम महसूस कर रहे हो, वह सामान्य है।”

“तुम्हारा शरीर बदल रहा है।”

“तुम्हारी भावनाएँ भी बदल रही हैं।”

“तुम्हें हर बात अभी समझना जरूरी नहीं।”

“कुछ पूछना हो तो पूछो।”

मेरी हमेशा से यह धारणा रही है कि सामान्य मानव शरीर-विज्ञान को अनावश्यक शर्म और वर्जना से नहीं घेरना चाहिए।

यौवन, आकर्षण, प्रजनन और संबंध जीवन का स्वाभाविक हिस्सा हैं।

फिर भी अनेक परिवार और संस्कृतियाँ इन विषयों पर बात करने से घबराती हैं। बच्चा कोई स्वाभाविक प्रश्न पूछता है और हम सीधा उत्तर देने के बजाय विषय बदल देते हैं या उसे ऐसा महसूस कराते हैं जैसे उसने कुछ गलत पूछ लिया हो।

लेकिन शरीर कैसे काम करता है, यह जानना गलत कैसे हो सकता है?

जब बच्चा पूछे कि बच्चे कैसे पैदा होते हैं, तो उसकी उम्र के अनुसार सरल और सच्चा उत्तर दिया जा सकता है।

यौवन आने पर उसे शरीर और भावनाओं में होने वाले सामान्य परिवर्तनों के बारे में बताया जा सकता है।

उसे व्यक्तिगत सीमाओं, सहमति, जिम्मेदारी और यौन संबंधों से जुड़े जोखिमों—जैसे अनचाही गर्भावस्था और यौन संचारित संक्रमण—के बारे में भी उचित शिक्षा मिलनी चाहिए।

सही जानकारी बच्चे को बिगाड़ती नहीं।

सही जानकारी उसकी रक्षा करती है।

अगर माता-पिता जवाब नहीं देंगे, तो जिज्ञासा समाप्त नहीं होगी। बच्चा उत्तर मित्रों, अफवाहों,

इंटरनेट या सोशल मीडिया से खोजेगा—और वहाँ जानकारी सही भी हो सकती है और गलत भी।

इसलिए खुलापन आवश्यक है।

हर बातचीत को बड़ा भाषण बनाने की आवश्यकता नहीं।

कभी-कभी केवल इतना कहना पर्याप्त है:

“यह बड़े होने का हिस्सा है। कोई बात परेशान करे तो मुझसे पूछना।”

ऐसे कुछ शब्द बहुत बड़ी चिंता को हल्का कर सकते हैं।

मैं इसे तब और स्पष्ट देखता हूँ जब किसी किशोर को इस अवस्था से गुजरते देखता हूँ।

वयस्क के लिए मुहाँसे छोटी समस्या हो सकती है।

लेकिन तेरह वर्ष के बच्चे को वही समस्या बहुत बड़ी लग सकती है। हम केवल त्वचा देखते हैं। किशोर शायद अपना पूरा आत्मविश्वास और सामाजिक स्थान उससे जोड़ रहा होता है।

माता-पिता को उस समय याद रखना चाहिए कि तेरह वर्ष का होना कैसा लगता था।

उसकी चिंता का मज़ाक मत उड़ाइए।

उसे नज़रअंदाज़ मत कीजिए।

जहाँ सहायता कर सकते हैं, कीजिए।

और साथ में उसे दृष्टिकोण भी दीजिए।

मैंने अपने बेटे से एक सरल बात कही:

“ये केवल चार वर्ष हैं। मुझे मालूम है कि ये हमेशा आसान नहीं होते। मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ रहूँ। अगर इन चार वर्षों में तुम उन चीज़ों पर नियंत्रण रख सको जिन पर तुम्हारा नियंत्रण है, ध्यान बनाए रखो और सही दिशा में चलते रहो, तो तुम बहुत आगे निकल सकते हो।”

इसका अर्थ स्वतंत्रता छीन लेना नहीं है।

इसका अर्थ है स्वतंत्रता के साथ संरचना देना।

स्कूल, परिवार या बोर्डिंग का ऐसा वातावरण जिसमें दिनचर्या, देखरेख और स्पष्ट अपेक्षाएँ हों, कई किशोरों के लिए सहायक हो सकता है।

उन्हें बढ़ने के लिए स्वतंत्रता चाहिए।

लेकिन सीमाएँ भी चाहिए।

उद्देश्य बच्चे को बंद करके रखना नहीं है।

उद्देश्य यह है कि जब तक वह स्वयं दिशा पकड़ना सीख रहा है, तब तक उसके लिए कुछ सुरक्षित सीमाएँ बनी रहें।

और इसी समय वास्तविकता को स्वीकार करना भी सीखना आवश्यक है।

किशोर स्वयं की तुलना दूसरों से बहुत करते हैं।

काश मैं ऐसा दिखता।

काश मेरी त्वचा ऐसी होती।

काश मैं उतना लोकप्रिय होता।

काश मेरे पास वह गुण होता।

माता-पिता को यह मानना चाहिए कि किशोर के लिए रूप और सामाजिक स्वीकार्यता महत्वपूर्ण

महसूस हो सकती है, लेकिन साथ ही यह भी समझाना चाहिए कि यही उसकी पूरी पहचान नहीं है।

आप सबसे लंबे नहीं हैं।

आपकी त्वचा हमेशा बिल्कुल साफ नहीं होगी।

आप स्कूल के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति नहीं होंगे।

आप अपने आदर्श व्यक्ति जैसे नहीं दिखेंगे।

कोई बात नहीं।

जो है, उसी से आगे बढ़िए।

जिसे विकसित कर सकते हैं, उसे विकसित कीजिए।

चरित्र, योग्यता, दया, अनुशासन, हास्य,
जिज्ञासा, शिक्षा और आत्मविश्वास धीरे-धीरे
बनते हैं।

और जीवन में अंततः यही अधिक मूल्यवान सिद्ध
होते हैं।

इन सबके बीच एक संदेश कभी नहीं बदलना
चाहिए:

परिवार आपके साथ है।

दोस्त बदलेंगे।

समूह बदलेंगे।

साथियों का दबाव आएगा और चला जाएगा।

कभी-कभी ऐसा लगेगा कि किसी समूह में फिट
होना ही दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण चीज है।

लेकिन केवल स्वीकार किए जाने के लिए स्वयं
को खो देना आवश्यक नहीं।

अपने आप बने रहिए।

जो आपके पास है, उसी के साथ आगे बढ़िए।

और यह याद रखिए कि घर वह जगह होनी
चाहिए जहाँ आपको अभिनय न करना पड़े।

ये चार वर्ष बहुत जल्दी बीत जाते हैं।

माता-पिता का काम केवल बच्चे को इन वर्षों से
निकालना नहीं है।

उसे इन वर्षों से ऐसा व्यक्ति बनाकर निकालना
है जो धीरे-धीरे समझने लगे कि वह कौन है।

बिना थकाए मार्गदर्शन करना

जब हम यह समझ लेते हैं कि तेरह से सत्रह वर्ष के बीच बच्चे के जीवन में पहले से ही कितना कुछ चल रहा होता है, तब अगला प्रश्न सामने आता है:

हम उस पर कितना दबाव डालें?

यही वह समय भी है जब अंक महत्वपूर्ण होते हैं, परीक्षाएँ कठिन होती हैं और परिवार अच्छे स्कूल तथा विश्वविद्यालय के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू करते हैं।

और तब एक आकर्षण पैदा होता है:

और पढ़ाई।

और ट्यूशन।

और होमवर्क।

और परीक्षाएँ।

और गतिविधियाँ।

और दबाव।

लेकिन तैयारी और थकान एक ही चीज़ नहीं हैं।

यदि हमारा उद्देश्य बच्चे को सफल बनाना है, तो गति और संतुलन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

अनुशासन चाहिए।

दिनचर्या चाहिए।

अपेक्षाएँ चाहिए।

लेकिन नींद भी चाहिए।

आराम भी चाहिए।

खेल और मनोरंजन भी चाहिए।

और इतना खाली स्थान भी चाहिए कि उसकी जिज्ञासा जीवित रहे।

हम चाहते हैं कि वह सत्रह वर्ष की आयु में जीवन के अगले चरण के लिए तैयार हो।

हम नहीं चाहते कि वह वहाँ पहुँचने से पहले ही थककर टूट चुका हो।

यहीं से हमारी अगली चर्चा शुरू होती है।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व

अंक महत्वपूर्ण हैं।

मैंने अपने बच्चों को A ग्रेड प्राप्त करना सिखाया। मैंने उनसे मेहनत करने, अच्छी तैयारी करने, अपने समय को व्यवस्थित करने और

अपनी क्षमता के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की अपेक्षा की।

लेकिन केवल अच्छे अंक किसी व्यक्ति को शिक्षित और सक्षम इंसान नहीं बनाते।

एक A ग्रेड आपको उसकी शैक्षणिक क्षमता के बारे में कुछ बताता है।

वह आपको उस पूरे इंसान के बारे में नहीं बताता जिसने वह A प्राप्त किया है।

जीवन बहुआयामी है। इसलिए बच्चे का विकास भी बहुआयामी होना चाहिए।

हम वास्तव में किस चीज़ का विकास करना चाहते हैं?

चरित्र।

संगठन की क्षमता।

निर्णय लेने की क्षमता।

स्वतंत्रता।

परिस्थितियों के अनुसार ढलने की क्षमता।

जिम्मेदारी।

ईमानदारी।

विनम्रता।

संवाद करने की क्षमता।

दूसरों के साथ मिलकर काम करने की क्षमता।

और शायद उससे भी अधिक महत्वपूर्ण—सच बोलने की क्षमता, तब भी जब सच बोलना आसान न हो।

गलती करने, उसे स्वीकार करने, उससे सीखने और आगे बढ़ जाने की क्षमता।

लेकिन इन सबके बाद एक और प्रश्न है जो मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है:

आपने वापस क्या दिया?

अपना पूरा जीवन केवल स्वयं को बेहतर बनाने में लगा देना बहुत आसान है।

आप एक असाधारण संगीतकार बन जाएँ।

बहुत अच्छा।

लेकिन और क्या?

आप बहुत अच्छे फुटबॉल खिलाड़ी बन जाएँ।

बहुत अच्छा।

लेकिन और क्या?

आप पढ़ाई में असाधारण हों। हर डिग्री प्राप्त कर लें। पद, पुरस्कार और उपलब्धियाँ इकट्ठी कर लें।

और फिर भी जीवन के बहुत बड़े हिस्से को
समझने से चूक सकते हैं।

एक दिन में केवल चौबीस घंटे होते हैं।

जीवन में भी केवल सीमित वर्ष होते हैं।

अगर हर घंटा केवल एक प्रतिभा को निखारने,
एक उपलब्धि के पीछे भागने या केवल स्वयं को
बनाने में चला गया, तो जीवन आपके सामने से
गुजर सकता है।

इसलिए बच्चों को छोटी उम्र से ही दुनिया को
थोड़ा व्यापक दृष्टिकोण से देखना सिखाना
चाहिए।

सबसे पहले यह पहचानिए कि आपको क्या
मिला है।

अगर आप ईश्वर में विश्वास करते हैं तो इसे
ईश्वर की कृपा कहिए।

यदि नहीं, तो भाग्य कहिए, नियति कहिए,
सौभाग्य कहिए, परिस्थिति कहिए—जो भी
आपके लिए उचित हो।

लेकिन एक बात समझिए:

**हम सभी एक ही प्रारंभिक रेखा से जीवन शुरू
नहीं करते।**

कुछ बच्चे ऐसे परिवारों में जन्म लेते हैं जहाँ
उनकी देखभाल होती है।

कुछ ऐसे स्थानों पर जन्म लेते हैं जहाँ शिक्षा
उपलब्ध है।

कुछ ऐसे समाजों में रहते हैं जहाँ मेहनत अवसर
पैदा कर सकती है।

और दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो उतनी ही मेहनत करते हैं, लेकिन फिर भी उनके सामने ऐसी बाधाएँ होती हैं जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।

इस सच्चाई को समझने से अहंकार नहीं, **कृतज्ञता** पैदा होनी चाहिए।

और कृतज्ञता से अंततः **विनम्रता** आनी चाहिए।

कोई भी पूरी तरह अकेले सफल नहीं होता।

आपके माता-पिता महत्वपूर्ण हैं।

आपका परिवार महत्वपूर्ण है।

आपके शिक्षक महत्वपूर्ण हैं।

आप जिस समाज में रहते हैं, वह महत्वपूर्ण है।

जिन लोगों ने आपको अवसर दिए, वे महत्वपूर्ण हैं।

जब बच्चा यह समझता है, तो उसके देखने का ढंग बदलता है।

वह अपने बगल में बैठे उस छात्र को देखने लगता है जो संघर्ष कर रहा है।

वह केवल यह नहीं सोचता:

मैं आगे कैसे निकलूँ?

वह यह भी सोचता है:

क्या मैं उसकी मदद कर सकता हूँ?

यहीं से वापस देना शुरू होता है।

माता-पिता के रूप में हमें बच्चों को ऐसे अवसर देने चाहिए जहाँ वे सेवा करना सीखें।

उन्हें ऐसी जगह ले जाइए जहाँ वे किसी और के लिए कुछ कर सकें।

वह वृद्धाश्रम हो सकता है।

बेघर लोगों की सहायता हो सकती है।

पशु आश्रय हो सकता है।

किसी के लिए भोजन बनाना हो सकता है।

किसी को कोई कौशल सिखाना हो सकता है।

स्वयंसेवा हो सकती है।

या केवल किसी ऐसे व्यक्ति के साथ समय बिताना हो सकता है जिसे उस समय की आवश्यकता है।

काम कौन-सा है, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है।

सीख क्या है—यह महत्वपूर्ण है।

जीवन केवल:

मैं, मैं, मैं

नहीं है।

जीवन **हम** भी है।

हम कोई द्वीप नहीं हैं।

हम दूसरे लोगों के बीच रहते हैं।

हम दूसरे लोगों पर निर्भर करते हैं।

हम ऐसे समाजों से लाभ उठाते हैं जो व्यवस्था,
संरचना, अवसर और कुछ हद तक न्याय प्रदान
करते हैं।

जब समाज अच्छी तरह चलता है, हम सभी लाभ
उठाते हैं।

जब हर व्यक्ति केवल यही सोचने लगे—

मुझे आगे बढ़ना है, बाकी लोगों से मुझे कोई
मतलब नहीं—

तो अंततः उसकी कीमत हम सभी चुकाते हैं।

माता-पिता कभी-कभी भूल जाते हैं कि वे वास्तव
में कितना बड़ा काम कर रहे हैं।

आप केवल एक बच्चे को नहीं पाल रहे हैं।

आप समाज का निर्माण कर रहे हैं।

आज का बच्चा कल वयस्क बनेगा।

शायद डॉक्टर।

शायद शिक्षक।

शायद सैनिक।

शायद अग्निशामक।

शायद आपातकालीन सेवा में काम करने वाला
व्यक्ति।

शायद इंजीनियर।

शायद कलाकार।

शायद माता-पिता।

शायद उद्यमी।

या शायद कुछ ऐसा जो आज हम कल्पना भी
नहीं कर सकते।

यही लोग भविष्य में समाज, देश और अंततः
दुनिया को आगे लेकर जाएँगे।

अगर हम बच्चों को दुनिया का व्यापक
दृष्टिकोण ही नहीं देंगे, तो हम ऐसे वयस्क पैदा
करने का जोखिम उठाते हैं जो सफल होना

जानते हैं, लेकिन दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना नहीं जानते।

और सहानुभूति महत्वपूर्ण है।

अगर हमने ऐसे बच्चे तैयार किए जो उपलब्धियाँ प्राप्त करना जानते हैं लेकिन दूसरों की परवाह करना नहीं जानते, तो हमने केवल आधा काम किया है।

मैं यह केवल इसलिए नहीं कहता क्योंकि यह सुनने में अच्छा लगता है।

शब्द आसान हैं। उन्हें जीकर दिखाइए।

मैंने इन्हीं सिद्धांतों को अपने बच्चों के साथ जीने की कोशिश की।

मेरे बच्चे पढ़ाई में बहुत अच्छे थे।

लेकिन मैं उनसे एक और प्रश्न पूछता था:

तुमने वापस क्या दिया?

एक समय हमने **Senior Net** नाम का एक संगठन बनाया।

उस समय कंप्यूटर रोज़मर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनने लगे थे।

ईमेल धीरे-धीरे पारंपरिक डाक की जगह लेने लगा था।

और बहुत से वृद्ध लोग ऐसी तकनीक के कारण पीछे छूटने लगे थे जिसे युवा लोग लगभग स्वाभाविक रूप से सीख रहे थे।

वे टाइप करना जानते थे।

वास्तव में उस पीढ़ी के बहुत से लोगों की टाइपिंग और लिखावट आज के बच्चों से बेहतर थी, क्योंकि कभी ये आवश्यक कौशल माने जाते थे।

लेकिन दुनिया बदल चुकी थी।

अब उन्हें यह सीखना था कि ईमेल कैसे खोलना है।

कैसे भेजना है।

कुछ कैसे प्रिंट करना है।

कंप्यूटर के माध्यम से संवाद कैसे करना है।

तकनीक स्वयं सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं थी।

महत्वपूर्ण बात यह थी कि केवल संवाद का माध्यम बदल जाने के कारण किसी बुजुर्ग को दुनिया से कट जाना नहीं चाहिए।

इसलिए बच्चे जाते थे और उनकी सहायता करते थे।

वे अपना समय देते थे।

उन्हें सिखाते थे।

और उन्हें सिखाते-सिखाते स्वयं भी सीखते थे।

कौशल बदलते हैं।

तकनीक बदलती है।

दुनिया बदलती है।

एक समय सुंदर लिखावट बहुत महत्वपूर्ण थी।

एक समय निबंध और लिखित अभिव्यक्ति
शिक्षा का बड़ा हिस्सा थे।

फिर कंप्यूटर आए।

फिर प्रोग्रामिंग महत्वपूर्ण होती गई।

भविष्य में भी नए कौशल पुराने कौशलों की
जगह लेते रहेंगे।

लेकिन कुछ चीज़ें कभी पुरानी नहीं होतीं।

चरित्र पुराना नहीं पड़ता।

सहानुभूति पुरानी नहीं पड़ती।

जिम्मेदारी पुरानी नहीं पड़ती।

कृतज्ञता पुरानी नहीं पड़ती।

संवाद की आवश्यकता समाप्त नहीं होती।

वापस देना कभी अप्रासंगिक नहीं होता।

उपकरण बदलते रहेंगे।

मानवीय आवश्यकता बनी रहेगी।

और यहीं से हम प्रतिभा की ओर आते हैं।

मैं अपने बच्चों से एक और सरल प्रश्न पूछता था।

मान लो कल तुम हाई स्कूल पूरा कर लेते हो।

तुम्हारे हाथ में डिप्लोमा है।

अब क्या?

तुम वास्तव में क्या कर सकते हो?

तुम्हारे पास कौन-सा कौशल है?

तुम्हें क्या करना इतना पसंद है कि तुम उसमें
निपुण होना चाहते हो?

और उतना ही महत्वपूर्ण:

क्या वह कौशल भविष्य में तुम्हें अपने पैरों पर
खड़ा होने में सहायता करेगा?

अपने जुनून का पीछा करने में कोई बुराई नहीं
है।

जुनून बहुत अच्छी चीज़ है।

लेकिन जुनून और व्यावहारिकता एक-दूसरे के
दुश्मन नहीं हैं।

मैं बच्चों से कहता था:

पहले चरित्र बनाओ।

फिर ऐसे कौशल विकसित करो जो तुम्हें अपने
पैरों पर खड़ा होने दें।

और फिर वह भी करो जिससे तुम्हें प्रेम है।

मेरे एक बेटे को कंप्यूटर पसंद थे।

उसने प्रोग्रामिंग सीखी।

वह इसमें इतना आगे गया कि बहुत छोटी उम्र में
ऐसे प्रोजेक्ट करने लगा जो सामान्य बच्चों के
स्तर से कहीं आगे थे।

मेरी एक बेटी को बहस करना और राजनीतिक
विज्ञान पसंद था।

बहुत अच्छा।

लेकिन मैं चाहता था कि वह कौशल और अवसर
को व्यावहारिक दृष्टि से भी देखे।

हमने साथ में दूसरे क्षेत्रों की खोज की।

हमने gemology तक साथ पढ़ी और
Associate Jewelry Professionals बने।

इसका अर्थ यह कभी नहीं था कि हर बच्चा
जौहरी बने या प्रोग्रामर बने।

मेरा संदेश बहुत सरल था:

कुछ करना सीखो।

तुम्हारे पास एक वास्तविक कौशल होना
चाहिए।

अपने जीवन में एक से अधिक आयाम रखो।

एक बच्चा तैराकी में गया।

एक संगीत में।

एक ने पियानो सीखा।

एक कंप्यूटर में गहराई तक गया।

क्यों?

क्योंकि जीवन बहुआयामी है।

केवल पढ़ाई पर्याप्त नहीं है।

केवल सेवा पर्याप्त नहीं है।

केवल प्रतिभा पर्याप्त नहीं है।

जीवन के अलग-अलग समय पर आपको अपने
व्यक्तित्व के अलग-अलग हिस्सों की
आवश्यकता होती है।

आप खाली समय में क्या करते हैं?

तनाव में क्या करते हैं?

जीवन कठिन होने पर किस चीज़ की ओर लौटते
हैं?

शायद संगीत।

शायद कंप्यूटर।

शायद खेल।

शायद कला।

शायद ईश्वर।

शायद प्रार्थना।

शायद ध्यान।

शायद कुछ बिल्कुल अलग।

उत्तर व्यक्ति का अपना है।

लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि मन के पास जाने के लिए रचनात्मक स्थान हों।

खाली मन ऐसी दिशाओं में जा सकता है जहाँ से विकास नहीं होता।

उद्देश्य, जिज्ञासा, रुचियाँ और उपयोगी कौशल युवा व्यक्ति को अपनी ऊर्जा लगाने के लिए बेहतर दिशा देते हैं।

समय के साथ मैंने अपने बच्चों में इन अलग-अलग चीज़ों को एक साथ आते देखा।

हाँ, उन्होंने पढ़ाई में सफलता प्राप्त की।

एक Princeton गया।

एक Stanford गई और बाद में MIT।

एक Harvard गया।

मुझे उन उपलब्धियों पर गर्व है।

लेकिन विश्वविद्यालयों के नाम कहानी का असली उद्देश्य नहीं हैं।

सवाल यह है कि वे वहाँ पहुँचे कैसे।

और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण:

वे किस तरह के इंसान बने?

मेरी एक बेटी शुरू में political science पढ़ना चाहती थी।

Stanford में एक छात्र ने उसके चुनाव का मज़ाक उड़ाया और यह संकेत दिया कि वह computer science के योग्य नहीं है।

उसे गुस्सा आया।

लेकिन उसने किसी दूसरे व्यक्ति को अपनी क्षमता की सीमा तय नहीं करने दी।

उसने दिशा बदली।

Computer science पढ़ी।

Political science को भी अपनी शिक्षा का हिस्सा बनाए रखा।

और अंततः Facebook में internship प्राप्त की।

बाद में उसे उस व्यक्ति से अपनी बात कहने का अवसर मिला जिसने कभी उस पर संदेह किया था।

सीख सरल थी:

किसी दूसरे व्यक्ति की क्षमता का कभी मज़ाक मत उड़ाइए।

लोग बढ़ सकते हैं।

लोग सीख सकते हैं।

लोग आपको आश्चर्यचकित कर सकते हैं।

किसी और के लिए उसकी सीमाएँ तय मत कीजिए।

हमारे परिवार में एक और बात हुई जो मेरे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण थी।

शिक्षा मेरे साथ समाप्त नहीं हुई।

एक बच्चे ने दूसरे को मार्गदर्शन देना शुरू किया।

फिर उसने अगली पीढ़ी तक कुछ बातें पहुँचाईं।

यहीं पर पालन-पोषण एक माता-पिता और एक बच्चे से बड़ा हो जाता है।

मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने लगते हैं।

यही विरासत है।

सिर्फ डिग्रियाँ नहीं।

सिर्फ पद नहीं।

सिर्फ पैसा नहीं।

सिर्फ प्रसिद्धि नहीं।

बल्कि वे मूल्य जो आपके बाद भी चलते रहें।

वे यादें जो आपके बाद भी जीवित रहें।

लोग यह याद रखें कि आपने उनके साथ कैसा व्यवहार किया।

आपके बच्चे याद रखें कि आप किस बात के लिए खड़े थे।

और फिर वे उन बातों को अपने बच्चों तक ले जाएँ।

यादें ही विरासत हैं।

अंततः हम वास्तव में बहुत कम चीज़ें अपने पीछे छोड़ते हैं।

मैं अपने माता-पिता को आज इसलिए याद करता हूँ क्योंकि उन्होंने क्या किया।

अच्छा।

बुरा।

सुंदर।

अपूर्ण।

हम सभी इसी तरह दूसरों की स्मृतियों में जीवित रहते हैं।

इसीलिए चरित्र इतना महत्वपूर्ण है।

मैं चाहता था कि मेरे बच्चे एक बात बहुत स्पष्ट रूप से जानें:

तुम गलती करोगे, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

सच बताओ, मैं तुम्हारे साथ हूँ।

अगर कुछ गलत किया है, हम उसे ठीक करेंगे।

अगर असफल हुए, हम उसका सामना करेंगे।

अगर खराब निर्णय लिया, हम उससे सीखेंगे।

लेकिन हमारे संबंध की नींव झूठ पर मत रखो।

**प्यार का अर्थ यह नहीं कि हर चीज़ स्वीकार
कर ली जाए।**

कभी-कभी प्यार का अर्थ “**नहीं**” भी होता है।

कभी प्यार का अर्थ सुधारना होता है।

कभी प्यार का अर्थ है किसी के साथ खड़े रहना
और फिर भी उससे कहना:

तुमने जो किया वह गलत था।

मैं अपने बच्चों के साथ खड़ा रहूँगा।

लेकिन मैं बेईमानी के साथ खड़ा नहीं रहूँगा।

इस अंतर को समझना आवश्यक है।

बच्चों को पता होना चाहिए कि घर वह जगह है
जहाँ वे सच बोल सकते हैं और फिर भी उन
लोगों को नहीं खोएँगे जो उनसे प्रेम करते हैं।

इसी तरह विश्वास बनता है।

और अब हम उस बात पर आते हैं जिसे मैं कहता
हूँ:

सम्पूर्ण व्यक्तित्व

मेरा अर्थ पूर्णता नहीं है।

कोई पूर्ण बच्चा नहीं है।

कोई पूर्ण माता-पिता नहीं है।

कोई पूर्ण इंसान नहीं है।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अर्थ है कि जितना संभव हो, इंसान के अलग-अलग पहलुओं का विकास किया जाए।

प्रतिभा।

कौशल।

चरित्र।

स्वास्थ्य।

रिश्ते।

निर्णय क्षमता।

जिम्मेदारी।

सहानुभूति।

योगदान।

शिक्षा इसका एक हिस्सा है।

पूरा नहीं।

प्रतिभा इसका एक हिस्सा है।

पूरा नहीं।

चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन चरित्र भी एक पूरे इंसान का हिस्सा है।

हमारे विश्वास हैं।

हमारे संदेह हैं।

हमारे रिश्ते हैं।

हमारी क्षमताएँ हैं।

हमारी कमजोरियाँ हैं।

हमारी जिम्मेदारियाँ हैं।

हमारी भावनाएँ हैं।

हमारे अनुभव हैं।

हम सम्पूर्ण इंसान हैं।

जो भीतर होता है, वह अंततः बाहर व्यक्त होता है।

और अब मैं वही प्रक्रिया एक बार फिर जी रहा हूँ।

Teelake मेरा जैविक पुत्र नहीं है।

लेकिन मेरे लिए उससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

मैंने उसे अपना बेटा चुना है।

वह मेरा बेटा है।

कहानी समाप्त।

माता-पिता होना केवल जीवविज्ञान नहीं है।

माता-पिता होना प्रतिबद्धता है।

हर दिन उपस्थित रहना।

दूसरे इंसान की जिम्मेदारी स्वीकार करना।

जब तक वह वयस्क नहीं हो जाता, मेरा मानना है कि उसे दिशा देना, सिखाना, सीमाएँ तय करना, गलती होने पर सुधारना, उसका साथ देना और उसे भविष्य के लिए तैयार करना मेरी जिम्मेदारी है।

उसके बाद उसका जीवन धीरे-धीरे उसका अपना हो जाता है।

पालन-पोषण का उद्देश्य यही होना चाहिए।

हमेशा नियंत्रण करना नहीं।

स्वतंत्रता के लिए तैयार करना।

वही सिद्धांत फिर लागू होते हैं।

मेहनत करो।

सीखो।

कौशल विकसित करो।

अपनी प्रतिभा खोजो।

अपने स्वास्थ्य की देखभाल करो।

रिश्ते बनाओ।

सच बोलो।

चरित्र विकसित करो।

जो सुविधाएँ तुम्हें मिली हैं उन्हें पहचानो, लेकिन
उनका अहंकार मत करो।

जिसे मदद चाहिए उसकी सहायता करो।

उपयोगी इंसान बनो।

और याद रखो:

तुम्हारा जीवन केवल तुम्हारे बारे में नहीं है।

हमें केवल पैसे के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं है।

हमें प्रसिद्धि के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं है।

हमें कुछ अधिक कठिन चीज़ का पीछा करना चाहिए:

एक अच्छा इंसान बनने का।

केवल किसी एक देश का नागरिक नहीं।

दुनिया का नागरिक।

अपने बड़े बच्चों के लिए मैं यही चाहता था।

Teelake के लिए भी मैं यही चाहता हूँ।

और वास्तव में यह पूरी पुस्तक इसी बारे में रही है।

एक perfect student तैयार करने के बारे में नहीं।

एक perfect résumé बनाने के बारे में नहीं।

A ग्रेड, ट्रॉफियाँ, admission letters और पद इकट्ठे करने वाला बच्चा बनाने के बारे में नहीं।

एक सम्पूर्ण इंसान बनाने के बारे में।

एक ऐसा व्यक्ति जो सफलता प्राप्त कर सके—

लेकिन दूसरों की परवाह भी कर सके।

जो स्वतंत्र रूप से खड़ा हो सके—

लेकिन यह भी समझे कि वास्तव में कोई भी पूरी तरह अकेला नहीं खड़ा होता।

जिसके पास कौशल हो—

लेकिन चरित्र भी हो।

प्रतिभा हो—

लेकिन विनम्रता भी।

महत्वाकांक्षा हो—

लेकिन कृतज्ञता भी।

सफलता हो—

लेकिन योगदान भी।

क्योंकि जीवन बहुआयामी है।

और अगर हम बच्चों को जीवन के लिए तैयार कर रहे हैं, तो उनकी शिक्षा भी बहुआयामी होनी चाहिए।

यही है सम्पूर्ण व्यक्तित्व।

वातावरण

हम अक्सर किसी सफल व्यक्ति को देखते हैं
और कहते हैं:

क्या प्रतिभा है।

कभी-कभी यह सच होता है।

लेकिन प्रतिभा कहानी का केवल एक हिस्सा है।

एक ही व्यक्ति को दो अलग-अलग वातावरण में रखिए, और आपको दो बिल्कुल अलग जीवन मिल सकते हैं।

यह बात मैंने बहुत गहराई से समझी है।

यह अमेरिका नहीं है।

यह भारत नहीं है।

यह थाईलैंड नहीं है।

यह वातावरण है।

एक बच्चा बुद्धिमान, जिज्ञासु, अनुशासित, खेल-कूद में अच्छा, कलात्मक या स्वाभाविक रूप से प्रतिभाशाली हो सकता है।

लेकिन प्रतिभा खाली जगह में विकसित नहीं होती।

उसे बढ़ने के लिए जगह चाहिए।

उसे अवसर चाहिए।

उसे अच्छे शिक्षक चाहिए।

उसे अपेक्षाएँ चाहिए।

उसे संसाधन चाहिए।

उसे प्रोत्साहन चाहिए।

उसे अनुशासन चाहिए।

उसे ऐसे लोग चाहिए जो उसके लिए एक
दरवाज़ा खोलने को तैयार हों।

और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे
ऐसा वातावरण चाहिए जहाँ मेहनत का परिणाम
मिलने की उचित संभावना हो।

इसका मतलब यह नहीं कि जिसे अवसर मिल गया वह अवश्य सफल होगा।

उसे फिर भी मेहनत करनी होगी।

उसे चुनाव करने होंगे।

उसे असफल होना होगा, फिर उठना होगा, सीखना होगा और दोबारा प्रयास करना होगा।

लेकिन किसी को पहाड़ चढ़ने के लिए कहना और किसी के पैर बाँधकर उसी पहाड़ पर चढ़ने को कहना—इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है।

वही प्रतिभा, अलग सीमा

उन लोगों के बारे में सोचिए जिनका जीवन अलग-अलग देशों और संस्कृतियों से होकर गुज़रा।

Har Gobind Khorana पंजाब में जन्मे और आगे चलकर molecular biology के महान वैज्ञानिकों में से एक बने।

Tammy Duckworth का जन्म थाईलैंड में हुआ और उन्होंने अपना जीवन अमेरिका में बनाया।

Tiger Woods का थाई संबंध उनकी माँ के माध्यम से था और वे अपनी पीढ़ी के सबसे प्रसिद्ध खिलाड़ियों में से एक बने।

इन तीनों की कहानियाँ बिल्कुल अलग हैं।

उनकी प्रतिभाएँ बिल्कुल अलग हैं।

लेकिन वे हमें एक ही सिद्धांत याद दिलाते हैं:

किसी व्यक्ति के आसपास का वातावरण यह तय कर सकता है कि उसकी मौजूदा क्षमता कितनी दूर तक विकसित हो पाएगी।

देश आपके अंदर प्रतिभा नहीं डालता।

व्यवस्था आपके लिए काम नहीं करती।

लेकिन एक अच्छा वातावरण आपको उड़ान भरने के लिए runway दे सकता है।

और runway के बिना एक शक्तिशाली विमान भी ज़मीन पर ही खड़ा रह जाता है।

मेरी अपनी कृतज्ञता

मैं यह बात अपने जीवन में भी देख सकता हूँ।

मैं आसानी से कह सकता हूँ कि मैंने जो कुछ हासिल किया, वह केवल मेरी मेहनत की वजह से हुआ।

मैंने मेहनत की।

लेकिन वह केवल आधी सच्चाई होगी।

अमेरिका ने मुझे ऐसा वातावरण दिया जहाँ मेहनत अवसर में बदल सकती थी।

शिक्षा मायने रखती थी।

योग्यता मायने रखती थी।

आप कुछ नया सीख सकते थे।

आप दिशा बदल सकते थे।

आप खुद को फिर से बना सकते थे।

आप कहीं और से आकर भी कह सकते थे:

मुझे कोशिश करने दीजिए।

और कभी-कभी कोई वास्तव में आपको कोशिश करने देता था।

यह बात मायने रखती है।

मैं इसके लिए कृतज्ञ हूँ।

इसलिए नहीं कि कोई भी देश पूर्ण है।

जैसे कोई पूर्ण इंसान नहीं है, वैसे कोई पूर्ण देश भी नहीं है।

लेकिन कृतज्ञता का अर्थ है यह स्वीकार करना कि किसी वातावरण ने आपको क्या दिया, बिना यह दिखावा किए कि उसमें कोई कमी नहीं थी।

मेरे बच्चों को भी उस वातावरण का लाभ मिला।

उन्हें फिर भी पढ़ना पड़ा।

उन्हें फिर भी मेहनत करनी पड़ी।

उन्हें फिर भी कौशल, चरित्र, अनुशासन और resilience विकसित करनी पड़ी।

लेकिन वे संभावना से घिरे हुए बड़े हुए।

जब उन्होंने क्षमता दिखाई, उस क्षमता के आगे बढ़ने की जगह मौजूद थी।

यह एक उपहार है।

माता-पिता के लिए इसका क्या अर्थ है?

यहीं यह विचार व्यावहारिक बनता है।

माता-पिता पूरी दुनिया को नियंत्रित नहीं कर सकते।

लेकिन हम उस छोटे वातावरण को प्रभावित
कर सकते हैं जिसमें बच्चा बड़ा होता है।

घर एक वातावरण है।

स्कूल एक वातावरण है।

दोस्त एक वातावरण हैं।

रात के खाने की मेज़ पर बच्चा क्या सुनता है,
वह भी वातावरण है।

हम क्या सहन करते हैं, वह वातावरण है।

हम किस बात को पुरस्कार देते हैं, वह वातावरण
है।

हम अपने व्यवहार से क्या दिखाते हैं, वह
वातावरण है।

एक बच्चा जो हमेशा सुनता है:

तुम यह नहीं कर सकते।

वह एक तरह के वातावरण में बढ़ रहा है।

दूसरा बच्चा जो हमेशा सुनता है:

तुम बिना मेहनत के कुछ भी कर सकते हो।

वह भी एक अलग तरह के वातावरण में बढ़ रहा है—और वह भी उतना ही नुकसान कर सकता है।

बेहतर वातावरण कहता है:

तुम शायद अपनी सोच से कहीं अधिक सक्षम हो। चलो पता लगाते हैं। लेकिन तुम्हें मेहनत करनी होगी।

यही है प्रोत्साहन और वास्तविकता का संतुलन।

अच्छा वातावरण लाड़-प्यार नहीं होता

अच्छा वातावरण बनाने का अर्थ जीवन आसान कर देना नहीं है।

वास्तव में, कभी-कभी सबसे अच्छा वातावरण जानबूझकर कठिनाई भी देता है।

बच्चों को अपेक्षाएँ चाहिए।

उन्हें सीमाएँ चाहिए।

उन्हें जिम्मेदारी चाहिए।

उन्हें “नहीं” सुनना चाहिए।

उन्हें सीखना चाहिए कि कामों के परिणाम होते हैं।

उन्हें यह समझना चाहिए कि निराशा का अर्थ दुनिया का अंत नहीं है।

ग्रीनहाउस पौधे को बढ़ने में मदद करता है।

वह पौधे के तने को खींचकर उसे लंबा नहीं करता।

वह केवल परिस्थितियाँ बनाता है।

पौधे को खुद बढ़ना होता है।

पालन-पोषण भी कुछ ऐसा ही है।

हमारा काम बच्चे को बनाकर तैयार कर देना नहीं है।

हमारा काम ऐसी परिस्थितियाँ बनाना है जिनमें बच्चा स्वयं विकसित हो सके।

केवल बच्चे को मत देखिए, वातावरण को भी देखिए

जब कोई बच्चा संघर्ष करता है, तो हम तुरंत पूछते हैं:

बच्चे में क्या समस्या है?

कभी-कभी पहले हमें यह पूछना चाहिए:

बच्चे के आसपास क्या हो रहा है?

क्या स्कूल उसके लिए उचित है?

क्या अपेक्षाएँ स्पष्ट हैं?

क्या वह पर्याप्त सो रहा है?

क्या घर में संरचना है?

उसके दोस्त कौन हैं?

क्या जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया जाता है?

क्या असफलता को catastrophe बना दिया जाता है?

क्या बच्चे की लगातार दूसरों से तुलना होती है?

क्या मेहनत की पहचान होती है, या सब कुछ मनमाना लगता है?

ये प्रश्न मायने रखते हैं।

क्योंकि कभी-कभी जो समस्या बच्चे के अंदर दिखाई देती है, वह आंशिक रूप से उसके आसपास के वातावरण की समस्या होती है।

वातावरण बदल दीजिए और वही बच्चा बहुत अलग व्यवहार कर सकता है।

जो वातावरण हम बनाते हैं, वही उनका सामान्य बन जाता है

बच्चे हमारी कही हुई बातों से कहीं अधिक हमारे जीवन से सीखते हैं।

अगर वे ऐसी जगह बड़े होते हैं जहाँ लोग आसानी से झूठ बोलते हैं, तो झूठ सामान्य बन जाता है।

अगर वे ऐसी जगह बड़े होते हैं जहाँ वादों का कोई महत्व नहीं, तो वादे भी महत्वहीन हो जाते हैं।

अगर वे ऐसी जगह बड़े होते हैं जहाँ हर कोई दूसरों को दोष देता है, तो दोष देना स्वभाव बन जाता है।

लेकिन अगर वे ऐसी जगह बड़े होते हैं जहाँ लोग गलती स्वीकार करते हैं, मेहनत करते हैं, अपना वचन निभाते हैं, दूसरों की मदद करते हैं और सीखते रहते हैं, तो यह सब भी सामान्य बन जाता है।

इसीलिए मैं बार-बार एक ही सिद्धांत पर लौटता हूँ:

शब्द आसान हैं। उन्हें जीकर दिखाइए।

आप केवल भाषण देकर बच्चे में ईमानदारी का वातावरण नहीं बना सकते।

आपको उसे जीकर बनाना पड़ता है।

और अब, Teelake

आज यह सिद्धांत मेरे जीवन में फिर चल रहा है।

Teelake ने जीवन ठीक उसी वातावरण में शुरू नहीं किया जिसमें मेरे बड़े बच्चों ने किया था।

लेकिन इससे यह तय नहीं होता कि मैं अब उसके लिए क्या कर सकता हूँ।

मैं किसी का अतीत नहीं बदल सकता।

लेकिन मैं यह प्रभावित कर सकता हूँ कि अब उसके चारों ओर क्या होगा।

संरचना।

शिक्षा।

अपेक्षाएँ।

कौशल।

स्वास्थ्य।

चरित्र।

अवसर।

दुनिया के प्रति व्यापक दृष्टिकोण।

और यह ज्ञान कि कोई उस पर विश्वास करता है
कि वह अपने वर्तमान से कहीं अधिक बन सकता
है—लेकिन उससे मेहनत की भी अपेक्षा की
जाएगी।

यही जिम्मेदारी है।

परिणाम की गारंटी देना नहीं।

कोई माता-पिता ऐसा नहीं कर सकते।

लेकिन परिस्थितियों को बेहतर बनाना।

संभावनाएँ बढ़ाना।

runway देना।

और फिर अंततः बच्चे को खुद उड़ना होगा।

अवसर जिम्मेदारी भी लाता है

और इसका एक अंतिम हिस्सा है।

जब आप पहचानते हैं कि वातावरण ने आपकी मदद की, तो कृतज्ञता केवल **धन्यवाद** कहकर समाप्त नहीं होनी चाहिए।

उसे कार्रवाई में बदलना चाहिए।

अगर किसी ने आपके लिए अवसर बनाया, तो किसी और के लिए अवसर बनाइए।

सिखाइए।

मार्गदर्शन कीजिए।

मदद कीजिए।

किसी के लिए दरवाज़ा खोलिए।

जो आपने सीखा है, उसका लाभ किसी और को दीजिए।

यही वह तरीका है जिससे अवसर बढ़ते हैं।

यही वह तरीका है जिससे एक पीढ़ी अगली पीढ़ी के वातावरण को बेहतर बनाती है।

और शायद यही सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों में से एक है जो हम किसी बच्चे को दे सकते हैं:

सिर्फ प्रतिभा नहीं।

सिर्फ शिक्षा नहीं।

सिर्फ पैसा नहीं।

बल्कि ऐसा वातावरण जिसमें उसके अंदर जो पहले से मौजूद है, उसे सामने आने का अवसर मिले।

क्योंकि प्रतिभा व्यक्ति की हो सकती है।

मेहनत व्यक्ति की हो सकती है।

चरित्र व्यक्ति का हो सकता है।

लेकिन उन सबको कितना खिलने दिया जाएगा,
यह अक्सर आसपास की दुनिया तय करती है।

**वातावरण बदल दीजिए, और आप उसकी
सीमा बदल सकते हैं।**

और कभी-कभी,

आप एक जीवन बदल देते हैं।

इसे जीओ: उदाहरण से पालन-पोषण

मैं हमेशा एक सरल सिद्धांत में विश्वास करता आया हूँ:

अपने शब्दों को जीओ। वरना वे केवल शब्द हैं।

जिस बात पर खुद अमल नहीं करते, उसका उपदेश मत दो।

अगर तुम खुद अनुशासित नहीं हो, तो अपने बच्चों से अनुशासन की मांग मत करो।

अगर तुम झूठ बोलते हो, तो उनसे ईमानदारी की मांग मत करो।

अगर तुम खुद बहाने बनाते हो, तो उनसे मेहनत की उम्मीद मत करो।

अगर तुम खुद अपना नियंत्रण खो देते हो, तो उनसे आत्मसंयम की मांग मत करो।

बच्चे जितना सुनते हैं, उससे कहीं अधिक देखते हैं।

वे सब देखते हैं।

इसलिए अगर उन्हें कुछ सिखाना है, तो उसे जीकर दिखाओ।

“मैं नहीं कर सकता” कहने से पहले कोशिश करो

एक बात जिसके लिए मेरे पास बहुत कम धैर्य है, वह है कोशिश किए बिना हार मान लेना।

“यह बहुत कठिन है।”

“मैं यह नहीं कर सकता।”

“यह काम नहीं करेगा।”

मेरा जवाब सरल है:

कोशिश करो।

पहले कोशिश करो।

अपना सर्वोत्तम प्रयास करो।

अगर काम न करे, तो उससे सीखो।

बदलाव करो।

फिर कोशिश करो।

उसके बाद निर्णय लो।

ईमानदार प्रयास के बाद असफल होने में कोई बुराई नहीं है। असफलता सिखाती है।

लेकिन केवल इसलिए कोशिश न करना कि कोई चीज कठिन दिखती है—यह कुछ नहीं सिखाता।

यह सिद्धांत पढ़ाई, काम, स्वास्थ्य, व्यवसाय, रिश्तों और लगभग जीवन की हर चीज पर लागू होता है।

पैसे के पीछे मत भागो

मैं अपने बच्चों से कहता हूँ:

पैसे के पीछे मत भागो।

जो काम करते हो उसमें अच्छे बनो।

विश्वसनीय बनो।

उपयोगी बनो।

कौशल विकसित करो।

अपना काम सही तरीके से करो।

लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो।

अपना शब्द निभाओ।

अगर तुम अच्छे हो, लोग ध्यान देते हैं।

बात फैलती है।

इसीलिए दो दुकानें एक-दूसरे के पास खड़ी हो सकती हैं, लगभग वही सामान बेच सकती हैं, फिर भी एक आगे बढ़ती है और दूसरी सिर्फ गुज़ारा करती रहती है।

अंतर अक्सर बहुत साधारण होता है।

एक दुकान लोगों को वापस आने का कारण देती है।

गुणवत्ता।

निरंतरता।

ईमानदारी।

सेवा।

प्रतिष्ठा।

पैसा अक्सर मूल्य के पीछे आता है; मूल्य पैसे के पीछे नहीं आता।

मानकों को लागू करना जरूरी है

नियम तो नियम हैं।

लेकिन जिन नियमों को लागू नहीं किया जाता,
वे केवल शब्द बनकर रह जाते हैं।

एक अच्छे और एक खराब सिस्टम के बीच अंतर
अक्सर नियमों की संख्या में नहीं होता।

अंतर होता है—**उन्हें लागू करने में।**

अगर मानक लगातार लागू किए जाएँ, तो लोग
अपने व्यवहार को बदलते हैं।

अगर नियमों को नजरअंदाज किया जा सकता
है, टाला जा सकता है, मोलभाव करके बदला
जा सकता है या उनसे बचा जा सकता है, तो
लोग सीख जाते हैं कि वह नियम वास्तव में
नियम नहीं है।

परिवार में भी यही बात लागू होती है।

अगर कोई मानक तय करो, तो उसका अर्थ हो।

लेकिन नियम लागू करने का मतलब आतंक नहीं है।

इसका मतलब है—निरंतरता।

माता-पिता को डर के जरिए घर नहीं चलाना चाहिए।

डर कुछ समय के लिए आज्ञाकारिता ला सकता है, लेकिन चरित्र नहीं बनाता।

पालन-पोषण का अर्थ “टाइगर पेरेंटिंग” नहीं है

मैं यह नहीं मानता कि सफलता केवल खून से आती है।

यह केवल वातावरण नहीं है।

यह अमीरी नहीं है।

यह हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड या एमआईटी नहीं है।

यह ऊँची आवाज में चिल्लाना नहीं है।

यह “टाइगर पेरेंट” होना नहीं है।

एक तरीका है।

मौजूद रहो।

सिखाओ।

मार्गदर्शन करो।

मानक तय करो।

जरूरत हो तो सुधारो।

मेहनत को प्रोत्साहित करो।

उन्हें कोशिश करने दो।

उन्हें दिखाओ कि तुम अपना जीवन कैसे जीते हो।

और यह सब लगातार करो।

यह अपने आप नहीं होता।

अच्छे बच्चे केवल इसलिए पैदा नहीं हो जाते कि वे किसी विशेष परिवार में जन्मे हैं।

पालन-पोषण मेहनत मांगता है।

अठारह वर्ष तक तुम मेरी जिम्मेदारी हो

अठारह वर्ष तक तुम मेरी जिम्मेदारी हो।

इसका मतलब है कि मेरी जिम्मेदारी है।

सिर्फ अधिकार नहीं।

जिम्मेदारी।

मुझे तुम्हें वयस्क जीवन के लिए तैयार करना है।

मुझे तुम्हें अनुशासन, निर्णय क्षमता, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी और अपने फैसलों के परिणामों से निपटना सिखाना है।

लेकिन मैं केवल आदेश देकर इन चीजों को पैदा नहीं कर सकता।

मुझे उन्हें करके दिखाना होगा।

अगर मैं चाहता हूँ कि तुम मेहनत करो, तो तुम्हें मुझे मेहनत करते देखना चाहिए।

अगर मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों का सम्मान करो, तो तुम्हें मुझे लोगों का सम्मान करते देखना चाहिए।

अगर मैं चाहता हूँ कि तुम ईमानदार रहो, तो मुझे ईमानदार होना होगा।

अगर मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी गलतियाँ
स्वीकार करो, तो मुझे भी अपनी गलतियाँ
स्वीकार करनी होंगी।

इसे जीओ।

शब्द आसान हैं।

उन्हें अपने साथ लेकर चलो

दूर खड़े होकर उपदेश मत दो।

अपने बच्चों को डराकर आज्ञाकारी बनाने की
कोशिश मत करो।

उन्हें अपने साथ लेकर चलो।

उन्हें भाग लेने दो।

उन्हें बताओ कि क्यों।

उन्हें दिखाओ कि फैसले कैसे किए जाते हैं।

जब तक तुम उनके साथ हो, तब तक उन्हें
जिम्मेदारी का अनुभव करने दो।

जब बच्चा छोटा हो, तो माता-पिता नदी के
किनारे बना सकते हैं।

लेकिन आखिरकार पानी को खुद बहना होता है।

तुम हमेशा उनके लिए नदी नहीं बन सकते।

नाव और पानी

एक थाई कहावत है:

น้ำพึ่งเรือ เสือพึ่งป่า

नाव पानी पर निर्भर है; बाघ जंगल पर निर्भर है।

यह पारस्परिक निर्भरता को व्यक्त करती है।

माता-पिता और बच्चे भी कुछ ऐसे ही हैं।

बच्चे को सुरक्षा, मार्गदर्शन, संरचना और उदाहरण के लिए माता-पिता की जरूरत होती है।

लेकिन माता-पिता को भी बच्चे के विश्वास और साथ की जरूरत होती है।

पालन-पोषण एकतरफा शक्ति का प्रयोग नहीं है।

यह एक संबंध है।

तुम नेतृत्व करते हो, लेकिन उन्हें तुम्हारे साथ चलना भी होगा।

तरीका ही संदेश है

मेरी किताबें यह नहीं कहतीं:

हार्वर्ड जाओ।

स्टैनफोर्ड जाओ।

एमआईटी जाओ।

अमीर बनो।

मेरी जिंदगी की नकल करो।

नहीं।

मेरा संदेश इससे कहीं सरल है।

तरीका मौजूद है।

मैंने उसे जिया है।

जो उपयोगी है, उसे लो।

उसे अपनी परिस्थितियों में लागू करो।

कोशिश करो।

सीखो।

बदलाव करो।

डटे रहो।

अपना सर्वोत्तम प्रयास करो।

शुरू करने से पहले बहाने मत बनाओ।

और सबसे बढ़कर:

अपने शब्दों को जीओ।

उनका उपदेश मत दो।

पाखंडी मत बनो।

आतंक मत बनो।

उन्हें जीओ।

अपने बच्चों को अपने साथ लेकर चलो।

और फिर, जब सही समय आए,
उन्हें बहने दो।